

मस्तक पर चक्र-पंचतंत्र

एक नगर में चार ब्राह्मण पुत्र रहते थे । चारों में गहरी मैत्री थी । चारों ही निर्धन थे । निर्धनता को दूर करने के लिए चारों चिन्तित थे । उन्होंने अनुभव कर लिया था कि अपने बन्धु-बान्धवों में धनहीन जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा शेर-हाथियों से भरे कंटीले जङ्गल में रहना अच्छा है । निर्धन व्यक्ति को सब अनादर की दृष्टि से देखते हैं, बन्धु-बान्धव भी उस से किनारा कर लेते हैं, अपने ही पुत्र-पौत्र भी उस से मुख मोड़ लेते हैं, पत्नी भी उससे विरक्त हो जाती है । मनुष्यलोक में धनके बिना न यश संभव है, न सुख । धन हो तो कायर भी वीर हो जाता है, कुरूप भी सुरूप कहलाता है, और मूर्ख भी पंडित बन जाता है ।

यह सोचकर उन्होंने धन कमाने के लिये किसी दूसरे देश को जाने का निश्चय किया । अपने बन्धु-बान्धवों को छोड़ा, अपनी जन्म-भूमि से विदा ली और विदेश-यात्रा के लिये चल पडे ।

चलते-चलते क्षिप्रा नदी के तट पर पहुँचे । वहाँ नदी के शीतल जल में स्नान करने के बाद महाकाल को प्रणाम किया । थोड़ी दूर आगे जाने पर उन्हें एक जटाजूटधारी योगी दिखाई दिये । इन योगिराज का नाम भैरवानन्द था । योगिराज इन चारों नौजवान ब्राह्मणपुत्रों को अपने आश्रम में ले गए और उनसे प्रवास का प्रयोजन पूछा । चारों ने कहा- "हम अर्थ-सिद्धि के लिये यात्री बने हैं । धनोपार्जन ही हमारा लक्ष्य है । अब या तो धन कमा कर ही लौटेंगे या मृत्यु का स्वागत करेंगे । इस धनहीन जीवन से मृत्यु अच्छी है ।"

योगिराज ने उनके निश्चय की परीक्षा के लिये जब यह कहा कि धनवान बनना तो दैव के अधीन है, तब उन्होंने उत्तर दिया- - "यह सच है कि भाग्य ही पुरुष को धनी बनाता है, किन्तु साहसिक पुरुष भी अवसर का लाभ उठा कर अपने भाग्य को बदल लेते हैं । पुरुष का पौरुष कभी-कभी दैव से भी अधिक बलवान हो जाता है । इसलिए आप हमें भाग्य का नाम लेकर निरुत्साहित न करें । हमने अब धनोपार्जन का प्रण पूरा करके ही लौटने का निश्चय किया है । आप अनेक सिद्धियों को जानते हैं । आप चाहें तो हमें सहायता दे सकते हैं, हमारा पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं । योगी होने के कारण आपके पास महती शक्तियाँ हैं । हमारा निश्चय भी महान् है। महान् ही महान् की सहायता कर सकता है ।"

भैरवानन्द को उनकी दृढ़ता देखकर प्रसन्नता हुई । प्रसन्न होकर धन कमाने का एक रास्ता बतलाते हुए उन्होंने कहा - "तुम हाथों में दीपक लेकर हिमालय पर्वत की ओर जाओ । वहाँ जाते-जाते जब तुम्हारे हाथ का दीपक नीचे गिर पड़े तो ठहर जाओ । जिस स्थान पर दीपक गिरे उसे खोदो । वहीं तुम्हें धन मिलेगा । धन लेकर वापिस चले आओ ।"

चारों युवक हाथों में दीपक लेकर चल पड़े । कुछ दूर जाने के बाद उन में से एक के हाथ का दीपक भूमि पर गिर पड़ा । उस भूमि को खोदने पर उन्हें ताम्रमयी भूमि मिली । वह ताँबे की खान थी । उसने कहा- -"यहाँ जितना चाहो, ताँबा ले लो ।" अन्य युवक बोले - "मूर्ख ! ताँबे से दरिद्रता दूर नहीं होगी । हम आगे बढ़ेंगे । आगे इस से अधिक मूल्य की वस्तु मिलेगी ।"

उसने कहा- "तुम आगे जाओ, मैं तो यहीं रहूँगा ।" यह कहकर उसने यथेष्ट ताँबा लिया और घर लौट आया ।

शेष तीनों मित्र आगे बढ़े । कुछ दूर आगे जाने के बाद उन में से एक के हाथ का दीपक जमीन पर गिर पड़ा । उसने जमीन खोदी तो चाँदी की खान पाई । प्रसन्न होकर वह बोला- "यहाँ जितनी चाहो चाँदी ले लो, आगे मत जाओ ।" शेष दो मित्र बोले- "पीछे ताँबे की खान मिली थी, यहाँ चाँदी की खान मिली है; निश्चय ही आगे सोने की खान मिलेगी । इसलिये हम तो आगे ही बढ़ेंगे ।" यह कहकर दोनों मित्र आगे बढ़ गये ।

उन दो में से एक के हाथ से फिर दीपक गिर गया । खोदने पर उसे सोने की खान मिल गई । उसने कहा- "यहाँ जितना चाहो सोना ले लो । हमारी दरिद्रता का अन्त हो जायगा । सोने से उत्तम कौन-सी चीज है । आओ, सोने की खान से यथेष्ट सोना खोद लें और घर ले चलें ।" उसके मित्र ने उत्तर दिया- "मूर्ख ! पहिले ताँबा मिला था, फिर चाँदी मिली, अब सोना मिला है; निश्चय ही आगे रत्नों की खान होगी । सोने की खान छोड़ दे और आगे चल ।" किन्तु, वह न माना । उसने कहा- "मैं तो सोना लेकर ही घर चला जाऊँगा, तूने आगे जाना है तो जा ।"

अब वह चौथा युवक एकाकी आगे बढ़ा । रास्ता बड़ा विकट था । काँटों से उसका पैर छलनी हो गया । बर्फीले रास्तों पर चलते-चलते शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया, किन्तु वह आगे ही आगे बढ़ता गया ।

बहुत दूर जाने के बाद उसे एक मनुष्य मिला, जिसका सारा शरीर खून से लथपथ था, और जिसके मस्तक पर चक्र घूम रहा था । उसके पास जाकर चौथा युवक बोला- "तुम कौन हो ? तुम्हारे मस्तक पर चक्र क्यों घूम रहा है ? यहाँ कहीं जलाशय है तो बतलाओ, मुझे प्यास लगी है ।"

यह कहते ही उसके मस्तक का चक्र उतर कर ब्राह्मणयुवक के मस्तक पर लग गया । युवक के आश्चर्य की सीमा न रही । उसने कष्ट से कराहते हुए पूछा- "यह क्या हुआ ? यह चक्र तुम्हारे मस्तक से छूटकर मेरे मस्तक पर क्यों लग गया ?"

अजनबी मनुष्य ने उत्तर दिया- "मेरे मस्तक पर भी यह इसी तरह अचानक लग गया था । अब यह तुम्हारे मस्तक से तभी उतरेगा जब कोई व्यक्ति धन के लोभ में घूमता हुआ यहाँ तक पहुँचेगा और तुम से बात करेगा ।" युवक ने पूछा- "यह कब होगा ?"

अजनबी- "अब कौन राजा राज्य कर रहा है ?"

युवक- "वीणा वत्सराज ।"

अजनबी- "मुझे काल का ज्ञान नहीं । मैं राजा राम के राज्य में दरिद्र हुआ था, और सिद्धि का दीपक लेकर यहाँ तक पहुँचा था । मैंने भी एक और मनुष्य से यही प्रश्न किये थे, जो तुम ने मुझ से किये हैं ।"

युवक - "किन्तु, इतने समय में तुम्हें भोजन व जल कैसे मिलता रहा ?"

अजनबी - "यह चक्र धन के अति लोभी पुरुषों के लिये बना है । इस चक्र के मस्तक पर लगने के बाद मनुष्य को भूख, प्यास, नींद, जरा, मरण आदि नहीं सताते । केवल चक्र घूमने का कष्ट ही सताता रहता है । वह व्यक्ति अनन्त काल तक कष्ट भोगता है ।"

यह कहकर वह चला गया । और वह अति लोभी ब्राह्मण युवक कष्ट भोगने के लिए वहीं रह गया ।

सीख : लालच बुरी बला है ।

अनुवाद - कुलदीप धर

भयक पर पक्ष-पंखें

एक नगर में पक्ष पक्ष पक्ष पक्ष पक्ष पक्ष। पक्षों में गरुड़ी बैठी थी। पक्षों की निचन थी। निचनता के पक्ष करने के लिए पक्षों पक्षित थे। उन्हें मनुष्य कर लिया था कि मपने मनु-मनुष्यों में उनकी जीवन वृत्ति करने की मपेक्षा मर-काषिषें में मर कंलीले एए गल में गरुणा मप्ला है। निचन वृत्ति के मर मनाएर की पक्षि में पक्षित है, मनु-मनुष्य ही उम में किनारा कर लेते हैं, मपने की पक्ष-पक्ष ही उम में भाप भेर लेते हैं, पक्षी ही उममें विरक्त है एही है। मनुष्यलोक में पक्षे विना न यम मंरुव है, न भाप। उन के उे कायर ही वीर के एउ है, कुरुप ही मुरुप करलाता है, एउ भुक्त ही पंखित मन एउ है।

यह भेदकर उन्हें उन कभाके के लिये किभी पक्षों में के एने का निश्चय किया। मपने मनु-मनुष्यों के केरा, मपनी एए-कुभि में विद्या ली एउ विद्या-यात्र के लिये गल पक्ष।

गलते-गलते विद्या नदी के उए पर पक्षित। वही नदी के मीउल एल में भ्रान करने के गल भुक्तकाल के पक्षम किया। पक्षी पक्ष मुगे एने पर उन्हें एक एएएएएणी धेगी पक्षितें पक्षि। उन धेगिराए का नाम हैरवाननुष। धेगिराए उन पक्षों में एरान पक्ष-पक्ष के मपने मुम्भ में ले गए एउ उनमें प्रथम का पक्षेएन पक्ष। पक्षों ने कला- "कम मनु-भिष्मि के लिये यात्री मने है। पक्षेपक्षन की रुभारा लक्ष है। मर या उे उन कभा कर की लोएंगे या भद्र का भागत करंगे। उम उनकी जीवन में भद्र मप्ली है।"

धैरिगण एव न उनके निस्सुय की परीक्षा के लिये एव वरु कला कि
 एनवान मनन उे दैव के मणीन है, उम उनेंने उडुर ढिया-- "वरु
 मण है कि हागृ की पुरुष के एनी मनता है, किनु भारुभिक
 पुरुष ही मवभर का लारु उा कर मपने हागृ के मल लेते है।
 पुरुष का पेरुष कसी-कसी दैव मे ही मणिक मलवान के एतु है।
 उमलिया मुप रुमे हागृ का नभलेकर निरुङ्गफित न करे। रुभने
 मम एनेपास्त्रन का पूरा प्रण करके की लोएने का निस्सुय किय
 है। मुप मनेक भिस्त्रिथे के एनते है। मुप गारुं उे रुमे मलायता ए
 मकते है, रुभारा पष-पूस्त्रन कर मकते है। धैगी केने के
 कारु मुपके पाभ मरुती मक्रिये है। रुभारा निस्सुय ही मलाना
 है। मलाना की मलाना की मलायता कर मकता है।"

हरवाननु के उनकी एडुता एापकर प्रमत्रता करे। प्रमत्र केकर
 एन कभाने का एक राभा मउलाते फार उनेंने कला - "रुभ काधे
 मे मीपक लेकर निभालय पवउ की उर एउ। वकी एउे-एउे
 एव रुभारे काष का मीपक नीए गिर पउते ०रु एउ। एिम
 भून पर मीपक गिर उमे पिटे। वकी रुंम, एन मिलेगा। एन
 लेकर वापिम एले मुउ।"

गारें वृवक काधे मे मीपक लेकर एल पउ। कुळ एर एने के
 गार उन मेमे एक के काष का मीपक रुभि पर गिर पउ। उम
 रुभि के पिस्त्रे पर उनें, उभमयी रुभि मिली। वरु उंम की एान
 थी। उमने कला-- "वकी एिउना गारु, उंम ले ले।" मनु वृवक
 गेले - "भ्रत ! उंम मे एरिडुता एर नकी देगी। रुभ मुगे मडेगे।
 मुगे उम मे मणिक भलु की वभु मिलेगी।"

उमने कहा- "तुम मुझे दू, मैं ते बर्तन रूँगा।" बरु कुरुकर
उमने बर्तन उँगा लिया और अर लौए मुखा।

मेध डीनें भिडु मुगे गड्ड। कुळ दुर मुगे एने के गड्ड उन मे मे एक
के काष का पीपक एभीन पर गिर पर। उमने एभीन पिपी ते
पीपी की पान पारें। पुभतु केकर बरु गेला- "बर्तन एडुनी
एके पीपी ले ले, मुगे भतु दू।" मेध दे भिडु गेले- "पीळ उँगे
की पान भिली घी, बर्तन पीपी की पान भिली है; निमुय की
मुगे मेने की पान भिलेगी। उमलिये रुभते मुगे की गड्डे।" बरु
कुरुकर डीनें भिडु मुगे गड्ड गये।

उन दे मे मे एक के काष मे दुर पीपक गिर गया। पिडे पर
उमे मेने की पान भिल गरें। उमने कहा- "बर्तन एडुना एके
मेना ले ले। रुभारी दरिद्रता का मुतु के दयगा। मेने मे उडुभ
कोन-भी पीए है। मुड, मेने की पान मे बर्तन मेना पिड ले और
अर ले एले।" उमके भिडु ने उडुर दिया- "भुत! पडिले उँगा
भिला घा, दुर पीपी भिली, मुग मेना भिला है; निमुय की मुगे
रडुनें की पान केगी। मेने की पान केड दे और मुगे एल।"
किनु, बरु न भाना। उमने कहा- "मैं ते मेना लेकर की अर एला
एडुगा, तुने मुगे दना है ते द।"

मुग बरु पीषा युवक एका की मुगे गड्ड। राभु गुरु विकए घा।
कीए मे उमका पैर कलनी के गया। गरीले राभु पर एलते-
एलते मरीर एरील-मील के गया, किनु बरु मुगे की मुगे गड्डा
गया।

गुरुत दुर एने के गड्ड उमे एक भतुधु भिला, एमका भार
मरीर एन मे लषपष घा, और एमके भमुक पर एकु पुभरका
घा। उमके पाम एकर पीषा युवक गेला- "तुम कोन है? उमदुर

भयुक्त पर एक हूँ प्रभार है ? यही कहीं एलास है ?
उत्तरा, भूँ प्रभार लगी है ।"

यह कहते ही उनके भयुक्त का एक उत्तर कर बहक के
भयुक्त पर लग गया । यह कह के मुझ की भी भाव रही । उनसे
कह मे कहते हुए प्रका - "यह कृ कृ ? यह एक दुम्भरे भयुक्त
मे कर कर भरे भयुक्त पर हूँ लग गया ?"

मएनगी भयुक्त ने उत्तर दिया - "भरे भयुक्त पर ही यह अभी उत्तर
मएनक लग गया था । यह यह दुम्भरे भयुक्त मे उसी उत्तरगा
एक के वृत्ति एन के लेख मे प्रभार कृ यही एक पकियाएँ एर
दुम्भरे गत करेगा ।" यह कह ने प्रका - "यह कृ है ?"

मएनगी - "यह कौन एक एक कर रहा है ?"
यह कह - "ही वृत्ति ।"

मएनगी - "भूँ काल का हन नहीं । मैं एक एक के एक मे
एक कृ था, एर भिन्नि का पीपक लेकर यही एक पकिया
था । मैं ही एक एर भयुक्त मे यही प्रभार किये थे, एर दुम्भरे
भूँ मे किये है ।"

यह कह - "किन्तु, उत्तरे मभय मे दुम्भरे एन व एल के मे भिलता रहा
?"

मएनगी - "यह एक एन के मति लेखी पुरुष के लिये गता है । उम्भ
एक के भयुक्त पर लगने के एक भयुक्त के रूप, प्रभार, नीए, एर,
भर मुझ नहीं मताते । केवल एक प्रभार का कृ ही मताता
रहा है । यह वृत्ति मन काल एक कृ है ।"

बरु करुकर बरु मला गघ। उर बरु मडि लेखी वृद्धं युवक
कधु हेगने के लिए बरुं ररु गघ।

भीप : लालम बुरी वला है।

मनुवाट - कुलमीप पर